एक दो दस

(बच्चों के खेलगीत)

संकलन मनोज साहू 'निडर'
चित्र बोस्की जैन

एक दो दस

(बच्चों के खेलगीत)

संकलन मनोज साहू 'निडर'
चित्र बोस्की जैन

एकलव्य

एक दो दस

EK DO DUS

संकलन: मनोज साहू 'निडर'
चित्र: बोस्की जैन

© एकलव्य
इस किताब के किसी भी भाग का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें और एकलव्य को सूचित करें।

पहला संस्करण: अक्तूबर 2011 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2014 (5000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: मार्च 2018 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2018 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: मार्च 2019 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: नवम्बर 2019 (4000 प्रतियाँ)
सातवाँ पुनर्मुद्रण: अप्रैल 2022 (5000 प्रतियाँ)
आठवाँ पुनर्मुद्रण: सितम्बर 2023 (5000 प्रतियाँ)

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 80 gsm मैपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-81-906971-3-2
मूल्य: ₹ 35.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: बॉक्स कॉरोगेटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल; फोन: +91 755 258 7551

प्रस्तावना

एकलव्य से प्रकाशित बच्चों के खेलगीतों का यह तीसरा संकलन है। इससे पहले प्रकाशित दोनों संकलन *बैठ घोड़ा पानी पी* और *अक्कड़-बक्कड़* खूब सराहे गए। पता नहीं इन गीतों का कोई रचनाकार है भी या फिर यूँ ही कभी खेल-खेल में किसी के मुँह से टूटी-फूटी लय में कुछ शब्द निकले और एक लम्बा सफर तय करते-करते एक गीत के रूप में ढल गए। स्रोत कुछ भी रहा हो, इन गीतों में काफी रस है, रोचकता है। हमारे देश के ग्रामीण व कस्बाई अंचल में शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र होगा जहाँ किसी न किसी रूप में खेलगीत प्रचलित न हों। बारीकी से देखें तो पता चलता है कि अलग-अलग स्थानों पर एक ही गीत उन स्थानीय परिवेशों में ढलकर मौजूद रहता है।

भाषा शिक्षण में खेलगीत की उपयोगिता पर प्रो कृष्ण कुमार की किताब *बच्चे की भाषा और अध्यापक* में विस्तृत चर्चा की गई है। *दूध जलेबी जग्गगा* की प्रस्तावना में तेजी ग्रोवर ने लिखा है, "अगर खेलगीत से बच्चे पढ़ने की शुरुआत करें, तो इस बात की बहुत सम्भावना है कि उन्हें पढ़ना और लिखना अपने आप ही अच्छा लगने लगे।" ये गीत वह सशक्त माध्यम है जिससे शिक्षा के क्षेत्र – खासकर भाषा शिक्षण – में बेहतर परिणाम लाए जा सकते हैं। इन गीतों से कई प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री और अन्य गतिविधियाँ तैयार की जा सकती हैं।

ये गीत अलग-अलग इलाकों से चुने गए हैं। लगभग सभी गीत बच्चों द्वारा ही सुनाए गए। टेसू सम्बन्धी गीतों का प्रचलन मालवांचल में अधिक है। लेकिन इनका प्रभाव बुन्देलखण्ड में भी दिखाई देता है। इसी प्रकार, 'मोटा सेठ' गीत रायसेन ज़िले के सुलतानपुर गाँव के बच्चों ने सुनाया था। 'न्यौता' गीत शाहगंज, ज़िला सीहोर की एक बालिका ने सुनाया था। जब उससे पूछा गया कि यह गीत उसने कहाँ से सीखा है तो उसका जवाब था, "जब भैया रोता था तो दादी यह गीत सुनाकर उसे चुप कराती थीं।" 'बिल्ली मौसी' गीत के साथ एक रोचक प्रसंग जुड़ा हुआ है। कुछ साल पहले जब एकलव्य के होशंगाबाद परिसर में *अक्कड़-बक्कड़* का विमोचन किया जा रहा था तो एक स्थानीय बुज़ुर्ग ने *अक्कड़-बक्कड़* के गीत सुनकर अपने बचपन को याद करते हुए 'बिल्ली मौसी' गीत सुनाया! हमने इसे भी शामिल किया है। सभी गीत अपने आप में अनूठे और बहुत-सी यादें समेटे हुए हैं। उम्मीद है संकलन आपको पसन्द आएगा।

मनोज साहू 'निडर'

मोटा सेठ

मोटा सेठ
सड़क पर लेट
आई गाड़ी
फूट गया पेट
गाड़ी का नम्बर एट्टी एट
चल पड़ी गाड़ी इंडिया गेट

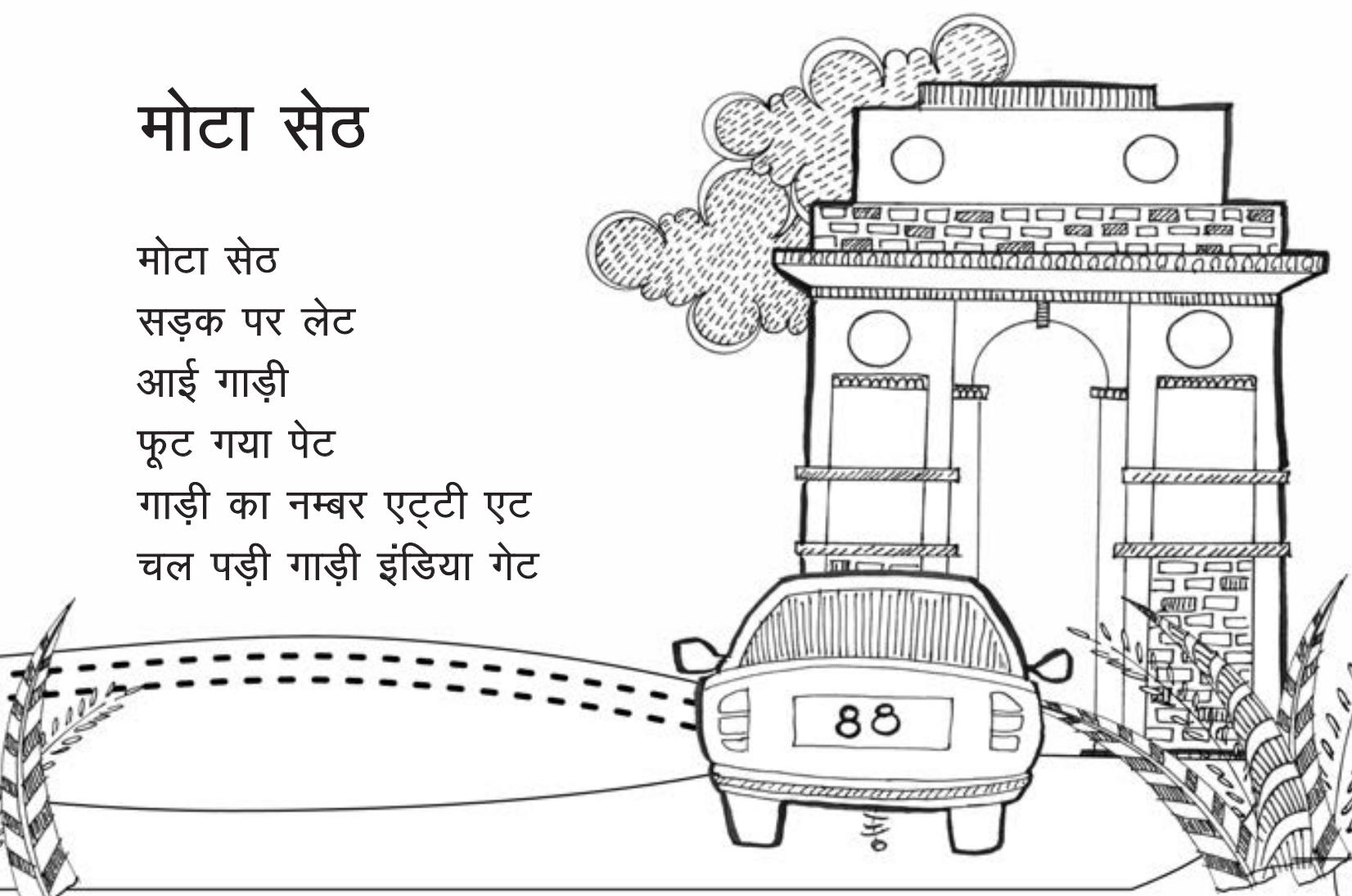

चन्दा मामा

चन्दा मामा आएँगे
दूध बतासे लाएँगे
चिड़िया चावल लाएगी
दादी खीर पकाएगी
हम सब मिलकर खाएँगे
जब चन्दा मामा आएँगे

मोटी अम्मा

मोटी अम्मा पिलपिली
बच्चा लेकर गिर पड़ी
बच्चे ने मारी लात
चल पड़ी बारात
बारात के नीचे अण्डा
खेलें गिल्ली-डण्डा

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी प्यारी मौसी
कौआ मेरा मामा
मौसी पहने फ्रॉक घाघरा
मामाजी पैजामा

काँव-काँव कौआ जी बोले
म्याऊँ-म्याऊँ बिल्ली
कौआ जी कलकत्ता जाएँ
बिल्ली जाए दिल्ली

बिल्ली खाए दूध-मलाई
कौआ खाए हलुआ
बिल्ली मौसी गोरी-गोरी
कौआ मामा कलुआ

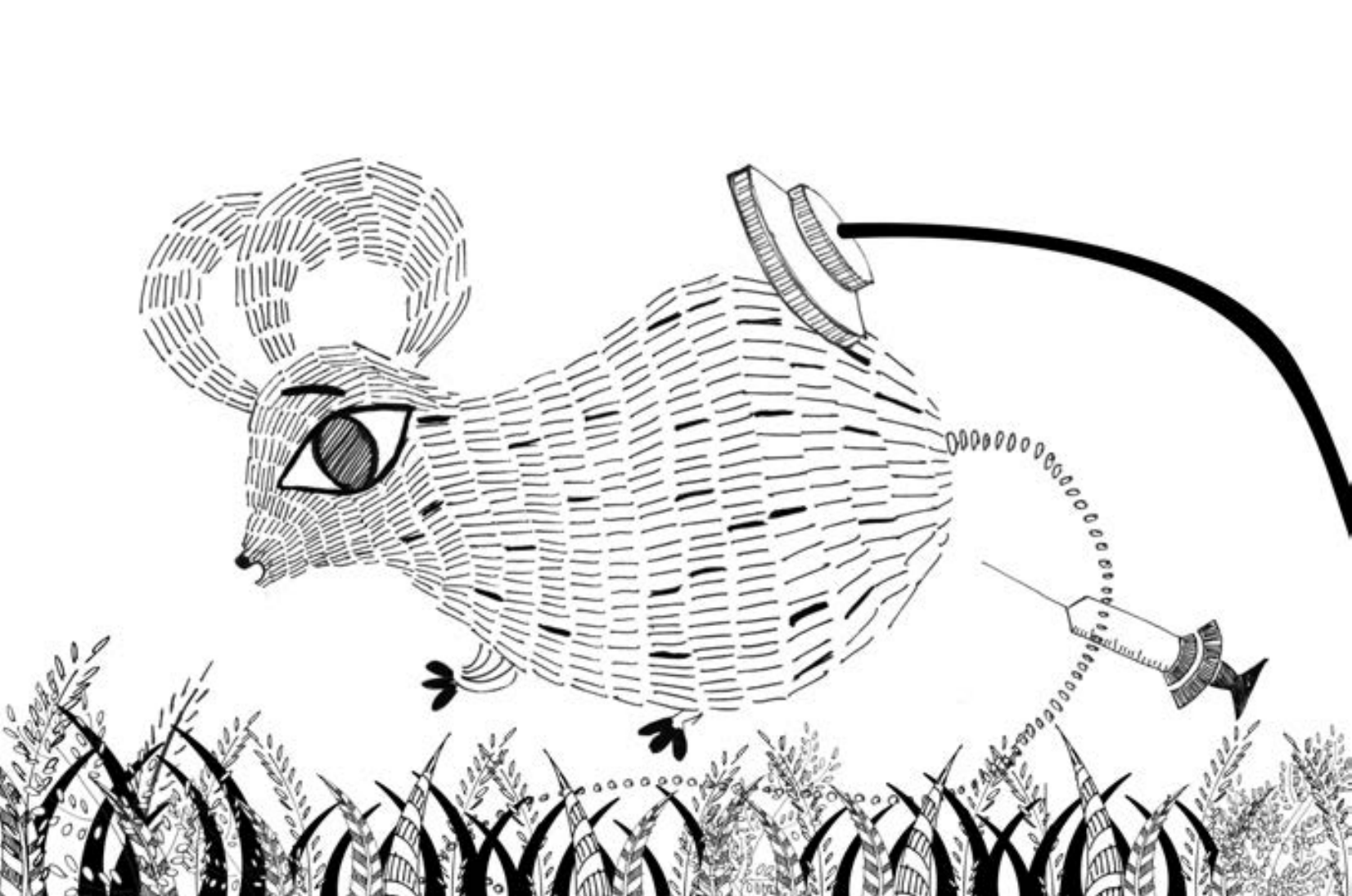

सोमवार

आज सोमवार है
चूहे को बुखार है
चूहा हुआ उदास
पहुँचा डॉक्टर के पास
डॉक्टर ने लगा दी सुई
चूहा बोला - उई!

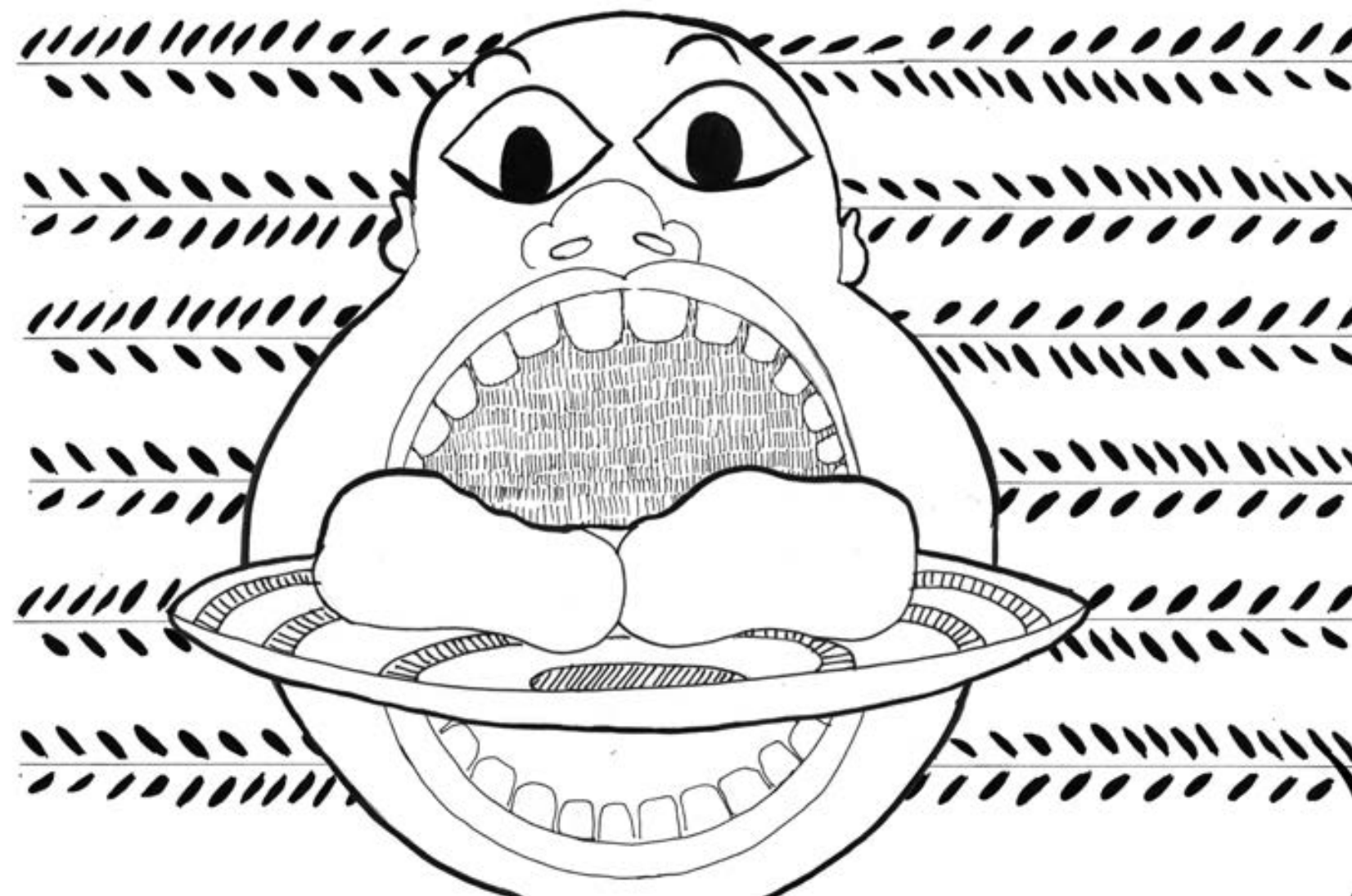

दो आलू

एक प्लेट में दो आलू
मोटू बोला मैं खा लूँ
खाते-खाते थक गया
रोटी लेकर भग गया
रोटी गिर गई रेत में
मोटू रोया खेत में

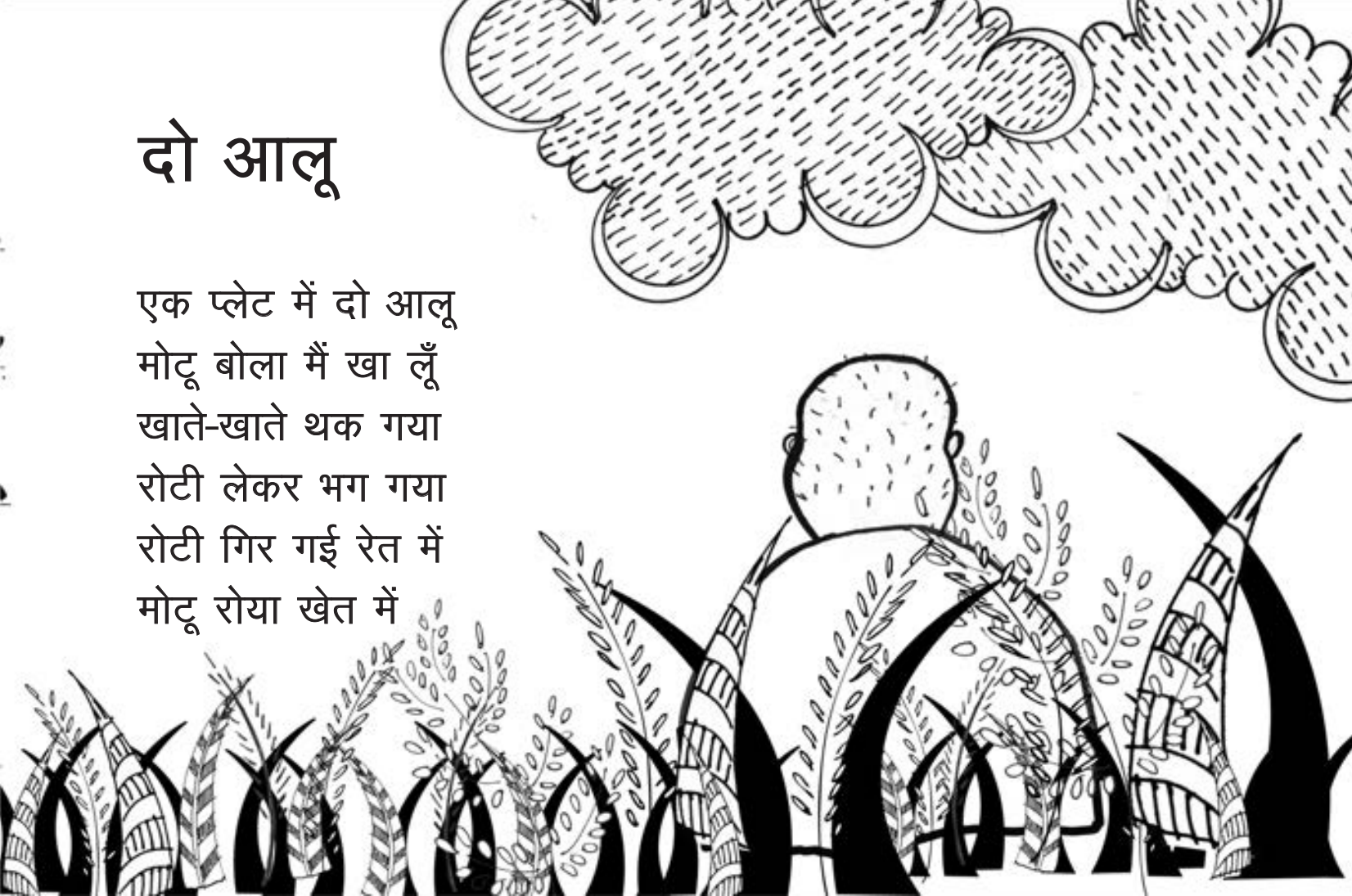

एक दो दस

एक दो दस
ऊपर से आई बस
बस के नीचे ठेला
रंग-बिरंगा मेला
मेला देखने जाएँगे
भाभी को ले जाएँगे

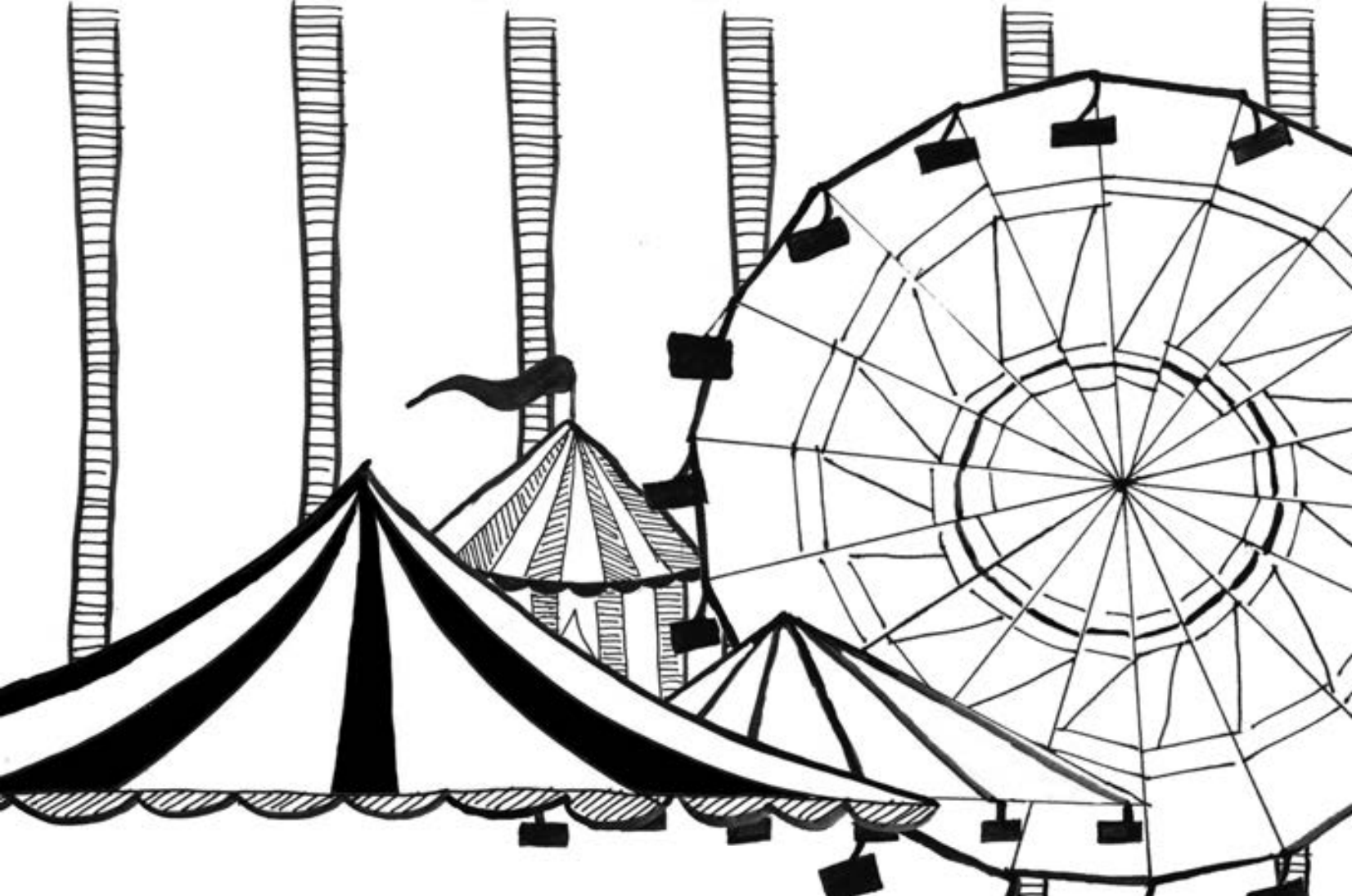

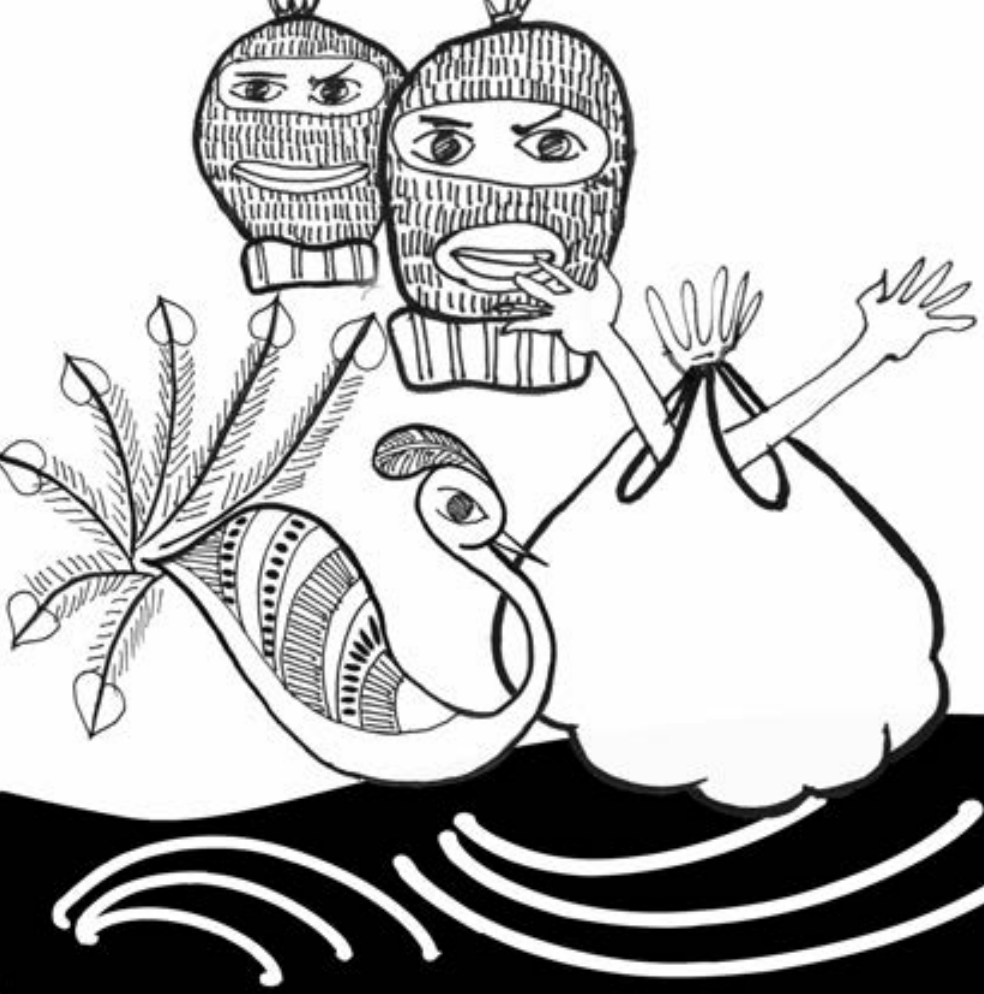

डग डग पसेरी

डग डग पसेरी, पान पसेरी
उड़ गए तीतर, रह गई मोर
बूढ़ी डुकरिया ले गए चोर
चोरों के घर खेती भई

मन-मन पीसें मन-मन
बड़े गुरु से जूझन जाएँ
जूझत-जूझत छप्पन छुरी
पाताल पानी डोला
भैंस का सींग पोला

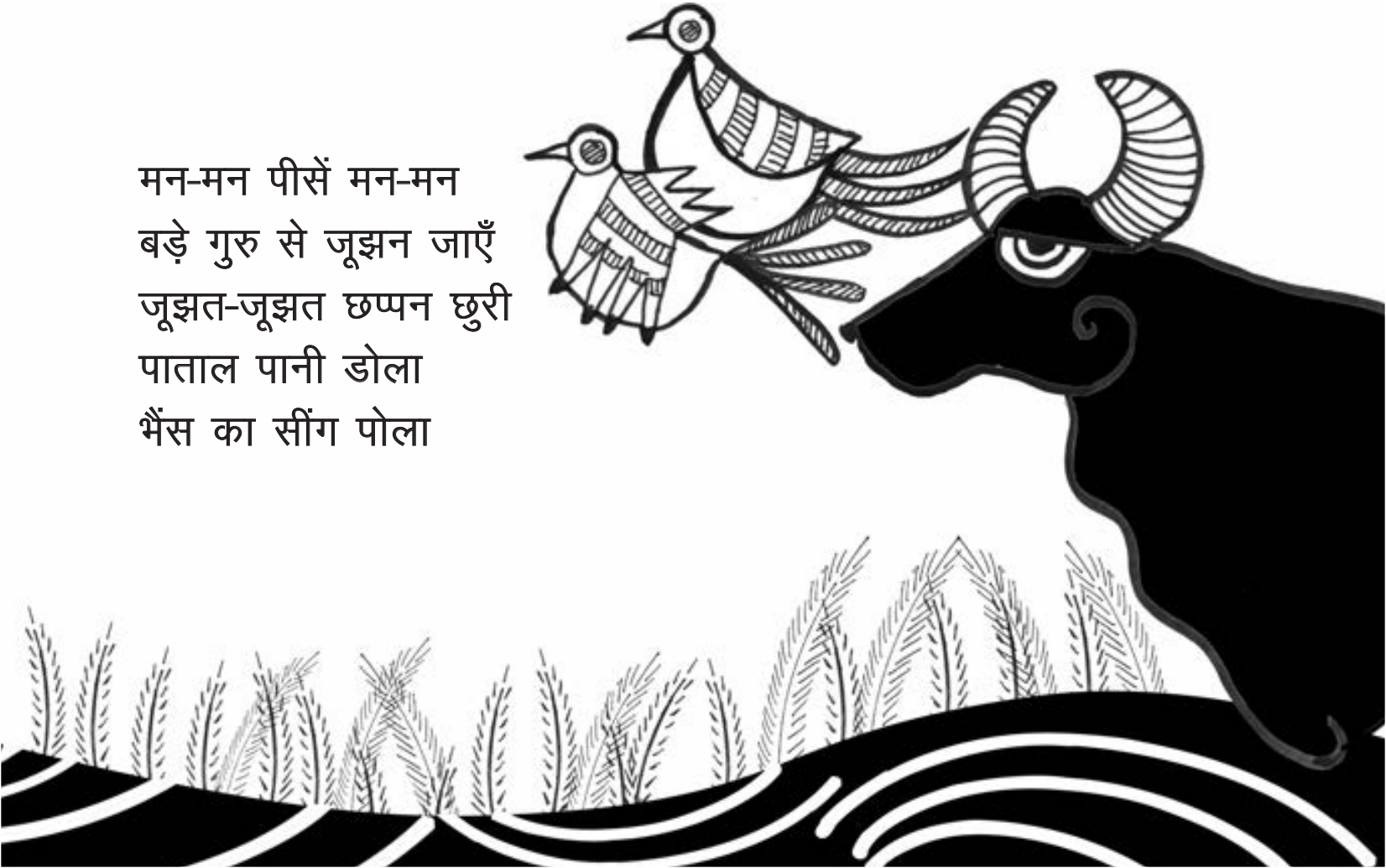

टेसू बेटा

टेसू बेटा बड़े अलाल
खाते बासी रोटी दाल
बासी दाल ने किया धमाल
टेसू की मुण्डी से उड़े बाल
चिकनी मुण्डी चाय गरम
टेसू राजा बेशरम

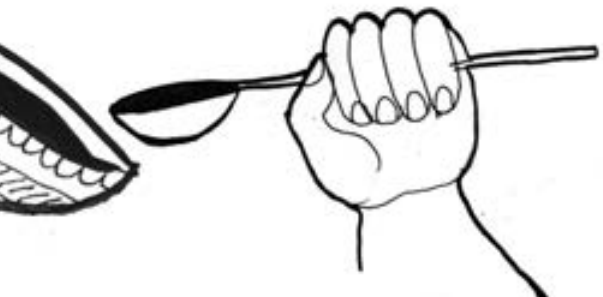

मनीराम

इत्ते से मनीराम
इतनी लम्बी मूँछ
सटक चले मनीराम
मटक चली मूँछ
जित्ते बड़े मनीराम
उनसे बड़ी मूँछ
लटक चले मनीराम
चटक चली मूँछ

टेसू के फूल

टेसू आए झूम के
टेसू छाए फूल के
टेसू की दो-चार बहुरिया
दो नाचें दो चढ़ें अटरिया
नौ मन पीसे दस मन खाए
बड़े गुरु से जूझन जाए
टेसू अकड़ करे, टेसू मकड़ करे
टेसू सौ रुपया लेकर टरे!

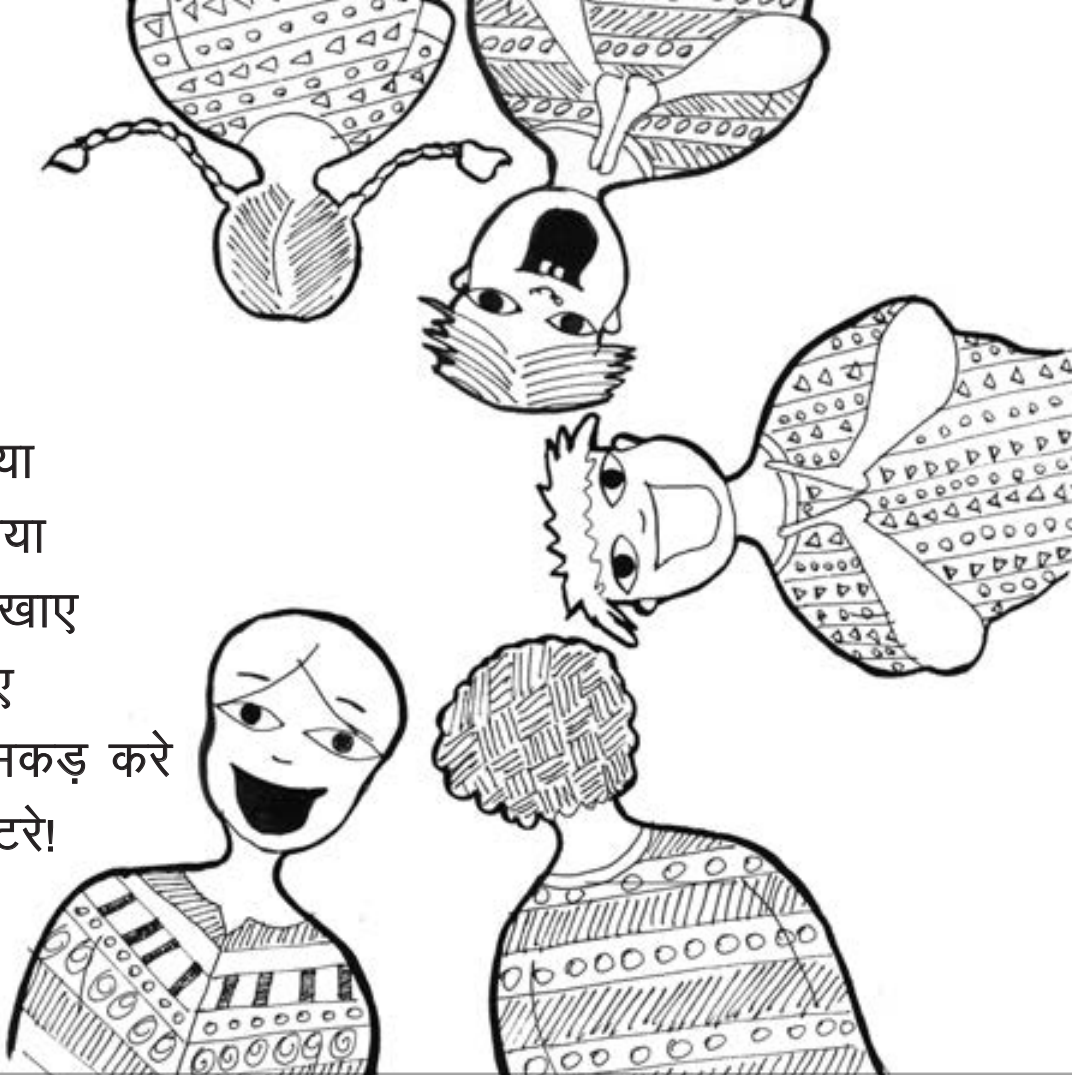

तोता

तोता बाग में जाता
आम तोड़ लाता
टूटी आम की डाली
रोया बाग का माली
खिड़की खोल के देखा
तोता बाग में देखा
माली बोला - तोता आजा
तोता बोला - अंकल टाटा!

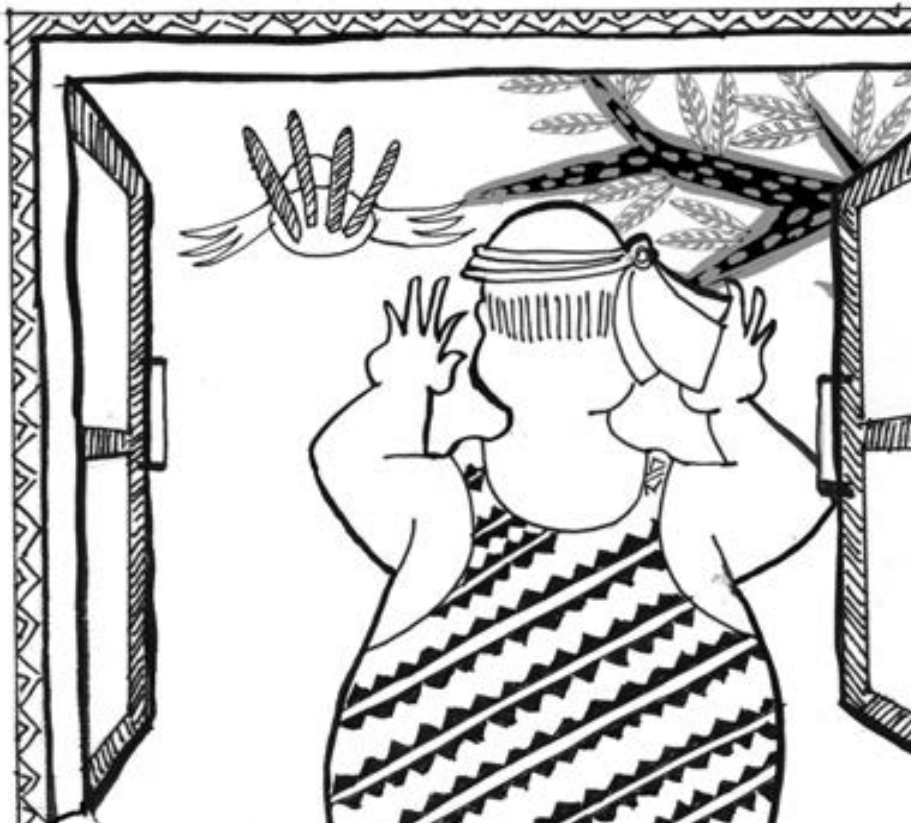

न्यौता

चूहे के घर न्यौता है
देखो क्या-क्या होता है
चिड़िया चावल लाएगी
बिल्ली खीर पकाएगी

बन्दर पान बनाएगा
शेर मामा खाएगा
मुन्ना तू क्यों रोता है
तेरा भी तो न्यौता है

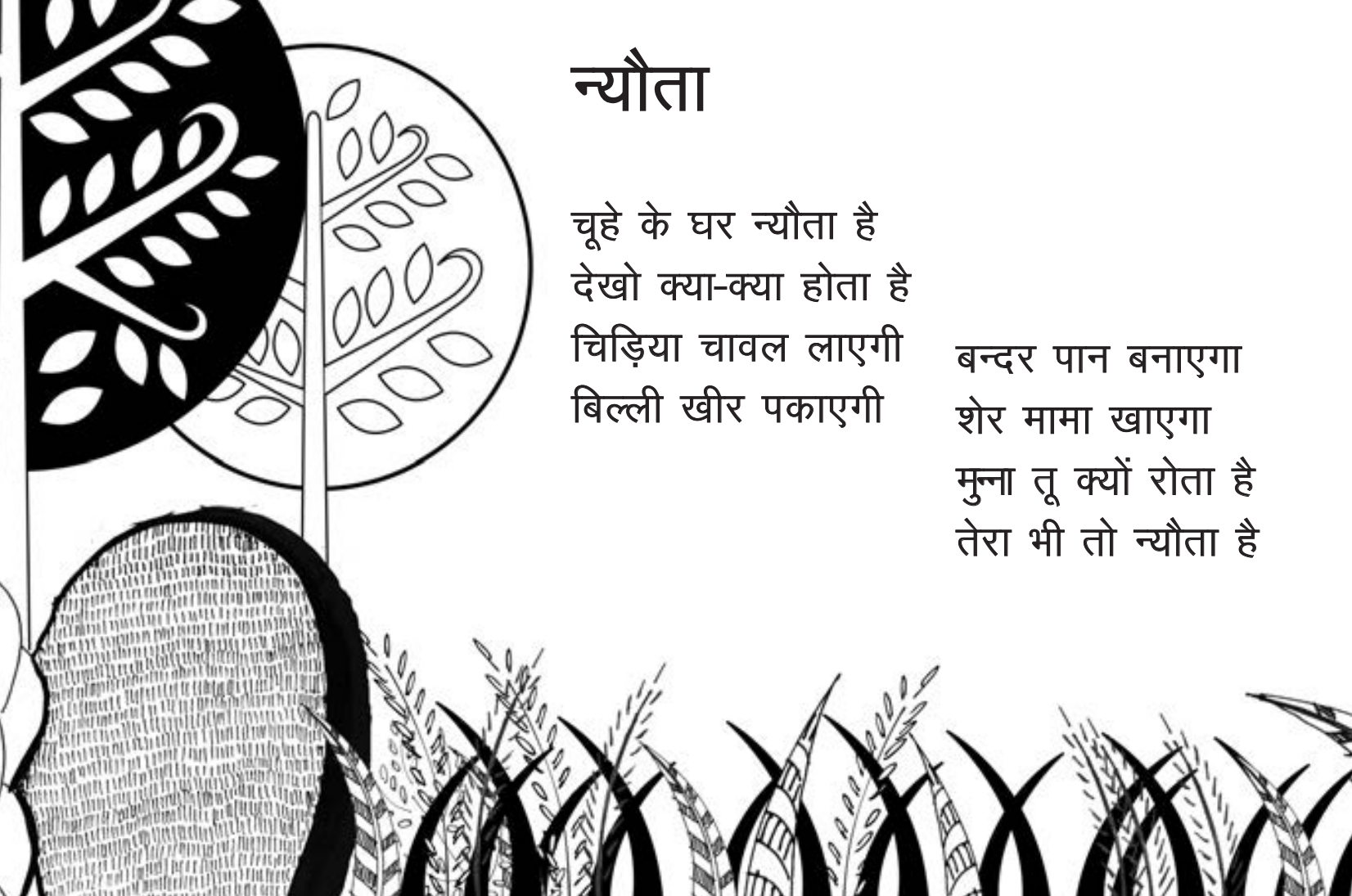

नौ मन पीसें दस मन खाएँ
बड़े गुरु से जूझन जाएँ

मनोज साहू 'निडर'
युवा शिक्षक व साहित्यकार हैं और शासकीय प्राथमिक शाला बछवाड़ा में पढ़ाते हैं। बाल-केन्द्रित शिक्षा में उनकी गहरी रुचि है।

बोस्की जैन
युवा ग्राफिक डिज़ाइनिंग में स्नातक। भारतीय आदिवासी कला के अध्ययन में विशेष रुचि। भोपाल में निवास।

parag
एकलव्य

मूल्य: ₹ 35.00

9 788190 697132